पांत्रीश बोलनो थोकडो

तथा

शीखामणना बोलोनो संप्रह. ब्रियावी प्रसिद्धकर्ता <mark>श्रावक जीमसिंह माणेक</mark> जैनपुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार. मांकवी, शाकगह्वी, मुंबइ. आवृत्ति पांचमी.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnayasagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

संवत् १९७१

शने १९१५.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

Jain Educationa International

For Personal and Private Use Only

www.jainelibrary.org

जाहेर खबर.

and the state of the second

पांकव चरित्र-(श्री पांच पांकव तथा नेमीश्वर नगवान अने श्री कृष्णादिकनुं सविस्तर गुजराती जाषान्तर.)--श्रा ग्रंथमां श्री नेमीश्वर जगवान, वल-जड, वासुदेव जे श्रीकृष्ण, प्रतिविष्णु जे जरासंध पांडव, कोर्व, जीष्मपितामह, कर्ण, डोणाचार्य अने कृपाचार्यादिक अनेक वीर पुरुषोनां चरित्रो व्यावी गयेलां ढे तेमज जिनधर्माजिलाषी द्युऊ श्रऊावान सम्यक्र्ड्रष्टी विवेकी सज्जनोना मनने आनंद ज-त्पन्न करनारी कथार्ज वैराग्य, नीति तथा सत्य प्र-तिङ्गा प्रमुखनो वोध करे हे. त्र्या यंथ पहेलां गुज-राती श्वक्तरमां ठपायेलो इतो, ते खपी जवाथी इमणां शास्त्री छक्तरमां ठपाव्यो हे, छने तेनी माथे मन रंजन करे तेवां रंगीन आशरे १०० चित्रो पण नाख्यां हे. U-0-0 हंसराज वठराजनो रास-ज्ञीलादि माहात्म्यरूप.

चंदनमढ्यागिरीनो रास तथा शालिज झ्शाहनो रास-शीलादि माहात्म्यरूप. ०-६-०

 $\sigma - \beta - \sigma$

॥ श्वय ॥ ॥ श्रीपांत्रीश बोखनो योकडो तथा शिखामणना बोखो प्रारंजः ॥

१ पहेंखे बोखे नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्य-गति अने देवतानी गति, ए चार गति जाणवी ॥ १ बीजे बोखे एकेंडिय जाति, बेंडिय जाति, तेंडिय जाति, चौरिंडिय जाति अने पंचेंडिय जाति, ए पांच जाति जाणवी ॥

३ त्रीजेबोसे पृथ्वीकाय, अपूकाय, तेजकाय, वायु-काय,वनस्पतिकाय अने त्रसकाय, ए ठ काय जाणवी॥ ४ चोथे बोसे श्रोत्रेंडिय, चक्तुरिंडिय, घाणेंडिय, रसेंडिय अने स्पर्शेंडिय, ए पांच इंडिय जाणवी ॥ ५ पांचमे बोसे आहारपर्याति, शरीरपर्याति, इंडियपर्याति, श्वासोठ्ठासपर्याति, जाषापर्याति अने मनःपर्याति, ए ठ पर्याति जाणवी.

६ ठठेवोसे पांच इंडिय तथा मनोबल, वचनबल, छने कायबल, एत्रणबल, एवं छाठ, छने नवमो श्वासोह्वास तथा दशमुं छायु, ए दश प्राण जाणवा॥ ७ सातमे बोखे औदारिकझरीर, वैक्रियझरीर, छाइारकझरीर, तैजसझरीर छने कार्मणझरीर, ए पांच झरीर जाणवां॥

ए छाठमे बोखे सल्यमनोयोग, छसल्यमनोयोग, मिश्रमनोयोग छने व्यवहारमनोयोग, ए मनना चार योग, तथा सल्यवचनयोग, छसत्यवचनयोग, मिश्रवचनयोग छने व्यवहारवचनयोग, ए चार व-चनना योग तथा छौदारिक काययोग, छौदारिक मिश्रकाययोग, वैक्रिय काययोग, वैक्रिय मिश्रकाय-योग, छाहारक काययोग, छाहारक मिश्रकाययोग छने कार्मण काययोग, ए सात कायना योग, एवं सर्व मली पन्नर योग जाणवा ॥

ए नवमे बोखे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, व्यवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान व्यने केवलज्ञान, एवं पांच ज्ञान, तथा मतिश्वज्ञान, श्रुतव्यज्ञान व्यने विजंगज्ञान, एवं त्रण श्रज्ञान, तथा चक्तुर्दर्शन, व्यचक्तुर्दर्शन, व्यवधिदर्शन त्र्या चक्तुर्दर्शन, यचक्तुर्दर्शन, व्यवधिदर्शन त्र्या केवलदर्शन, एवं चार दर्शन मली बार उपयोग॥ १० दशमे बोले ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणी-य कर्म, वेदनीय कर्म, मोहनीय कर्म, व्यायुः कर्म, नाम कर्म, गोत्र कर्म श्रने अंतराय कर्म, ए आठ कर्म ॥ 22 अगीयारमे बोखे मिथ्यात्व ग्रुणठाणुं, साखा-दन ग्रुणठाणुं, मिश्र ग्रुणठाणुं, अत्रतिसम्यग्दष्टि ग्रुण-ठाणुं, देशविरति ग्रुणठाणुं, प्रमत्त ग्रुणठाणुं, अप्रमत्त ग्रु-णठाणुं, निवृत्तिबादर ग्रुणठाणुं, अनिवृत्तिबादर ग्रुणठा-णुं, सूझ्भसंपराय ग्रुणठाणुं, जपशांतमोइ ग्रुणठाणुं इीणमोह ग्रुणठाणुं, सयोगीकेवसी ग्रुणठाणुं अने अयोगीकेवली ग्रुणठाणुं, एवं चौद ग्रुणठाणां ॥

११ बारमे बोखे जीवशब्द, छजीवशब्द छने मिश्र-शब्द, ए त्रण विषय श्रोत्रेंडियना ढे, तथा कालो, नीलो, पीलो,रातो छने धोलो, ए पांच विषय चक्त-रिंडियना हे, तथा सुरजिगंध अने छरजिगंध, ए बे विषय घार्णेडियना हे, तथा कम्वो,कषायेलो,खाटो, मीठो छने तीखो, एपांच विषय रसेंडियना हे, तथा सुंवालो, खरखरो, इलवो, जारे, शीत, उष्ण, लूखो छने चोपड्यो, ए आठ विषय स्पर्शेंडियना हे. एवं सर्वे मली पांचे इंडियना त्रेवीश विषय जाएवा १३ तेरमे बोसे जीवने श्वजीव करी जापे मिथ्यात्व, छजीवने जीव करी जाणे ते मिथ्यात्व, धर्मने अधर्म करी जाएे ते मिथ्यात्व, अधर्मने धर्म करी जाणे ते मिथ्यात्व, साधुने व्यसाधु करी सद्दहे

ते मिथ्यात्व, छसाधुने साधु करी सद्दहे ते मिथ्यात्व, संवरजाव सेवनरूप मोक्तमार्ग, तेने जन्मार्ग करी सदहे ते मिथ्यात्व, विषयादि सेवनरूप जन्मार्ग, तेने मोक्तमार्ग करी सददे ते मिथ्यात्व, वायरा छादिक रूपी पदार्थने छरूपी करी सददे ते मिथ्यात्व, मो-क्वादिक छरूपी पदार्थने रूपी करी सददे ते मि-थ्यात्व. ए दश प्रकारनां मिथ्यात्व जाणवां॥

१४चौदमे बोखे नव तत्त्वना जाणपणा विषे एक-सो ने पन्नर बोख धारवा, ते कहे ठे-

॥ प्रथम जीवतत्त्वना चौद बोल कहे छे. एक सूझ्म एकेंडिय, बीजा बादर एकेंडिय, त्रीजा बेंडिय, चोथा तेंडिय, पांचमा चौरिंडिय, छठा छसन्नीपंचेंडिय छने सातमा सन्नीपंचेंडिय, ए सात जातिना जीव छे, तेने एक पर्याप्ता छाने बीजा छपर्याप्ता, एम बे

बे जेदे करतां चौद जेद जीवना थाय हे ॥ ॥ बीजा अजीवतत्त्वना चौद बोल कहे हे. धर्मा-स्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण जेद तथा अधर्मास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण जेद तथा आकाशास्तिकायनो खंध, देश अने प्र-देश, ए त्रण जेद अने काल ऊव्यनो एकज जेद. एवं दश जेद अरूपी अजीवना याय. तेनी साथे पु-जलना खंध, देश, प्रदेश अने परमाणु ए चार जेद रूपी ठे, ते मेलवतां चौद जेद अजीवना याय ठे॥ ॥पुएय नव प्रकारे बंधाय ठे,ते नव जेद लखीए ठीए. अन्नपुषे, पणपुषे, शेणपुषे, सेणपुषे, वठ्ठपुषे, मनपुषे, वयपुषे, कायपुषे अने नमस्कारपुषे एवं नव॥

॥ पाप छढाँर प्रकारेबंधाय ठे,ते लखीए ठीए. प्रा-णातिपात, मृषावाद, छदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, कोध, मान, माया, लोज, राग, देष, कल्रह, छज्या-ख्यान, पैशुन्य, रति छरति, परपरिवाद, माया मृषा-वाद, मिथ्यात्वशाख. एवं छढार जेद थया ॥

॥ आश्रव वीश प्रकारे कहे छे. १ मिथ्यात्वाश्रव, श् अव्रताश्रव, ३ प्रमादाश्रव, ४ कषायाश्रव, ५ योगाश्र-व, ६ हिंसा करवी ते प्राणातिपाताश्रव, ७ मृषावादा-श्रव, ० चोरी करवी ते अदत्तादानाश्रव, ए कुशीला-श्रव, १० परिग्रह राखवो ते परिग्रहाश्रव, ११ श्रोत्रें-डियने मोकली राखे ते श्रोत्रेंडियाश्रव, ११ चर्छारें-डियने मोकली राखे ते चर्छारेंडियाश्रव, १३ झाणें-डियने मोकली राखे ते प्राणेंडियाश्रव, १४ रसेंडि-यने मोकली राखे ते रसेंडियाश्रव, १४ रसेंडि- यने मोकली राखे ते स्पर्शेंडियाश्रव, तेमज मन आ दिक त्रणने मोकलां राखे ते १६ मनआश्रव, १७ वच-नाश्रव अने १० कायाश्रव, १ए जंमोपकरण खेवा मूक-वानी अजयणा करे ते जंमोपकरणाश्रव,१०सुचि कुसंग सेवन करे ते कुसंगाश्रव. एवं वीश जेद थया ॥

॥ हवे संवरना वीश जेद कहे हे. रसमकित संवर, १ व्रतपच्चकाण संवर, ३ अप्रमाद संवर,४ अकषाय संवर, थ छयोग संवर, ६ प्राणातिपात संवर, ९ मृ-षावाद न बोसे ते संवर, ए अदत्त न सीए ते संव-र, ए मैथुन न सेवे ते संवर, १० परियह न राखे ते संवर, ११ श्रोत्रेंडियने वश करे ते संवर, ११ चहु-रिंडियने वज्ञ करेते संवर, १३ घाणेंडियने वश करे ते संवर, १५ रसेंडियने वज्ञ करे ते संवर, १५स्पर्शें-डियने वहा करे ते संवर, १६ मन वहा करे ते मनः संवर, १७ वचन वश करे ते वचन संवर, १७ काय वश करे ते काय संवर, १७ जंडोपकरणनी अजयणा न करे ते संवर, १० सुचि कुसंग न सेवे ते संवर ॥ ॥ निर्जाराना बार जेद कहे हे. १ अनशन तप, २ जणोदरी तप, ३ वृत्तिसंदेभप तप, ४ रसत्याग तप, थ कायक्वेश तप, ६ संलीनता तप, ९ प्रायश्चित्त तप, 5 विनय तप, ७ वैयादृत्य तप, १० सज्जाय तप, ११ ध्यान तप, ११ कायोत्सर्ग तप, एवं बार ॥-

॥ बंधतत्त्वना चार जेद कहे ठे. प्रकृतिबंध,स्थिति-बंध, अनुजागबंध अने प्रदेशबंध, एवं चार थया॥ ॥ मोक्ततत्त्वना चार जेद कदे ठे. एक ज्ञान, बीज़ं

दर्शन, त्रीज़ं चारित्र छने चोथुं तप. ए नव तत्त्वना जाणपणा आश्रयी एकसो ने पन्नर बोल कह्या ॥

१५ पन्नरमे बोखे झव्यात्मा, कषायात्मा, योगात्मा, जपयोगात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, चारित्रात्मा छने वीर्यात्मा, ए छाठ प्रकारना छात्मा कह्या ठे ॥

र६ सोलमे बोले र असुरकुमार, १ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीप-कुमार, ९ दिशाकुमार, ए उदधिकुमार, ए स्तनित-कुमार, १० वायुकुमार, ए दश जुवनपतिनां दश दंगक तथा सात नारकीनुं एक दंगक, तथा पृथ्वीकाय, अप्रकाय, तेजकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय, ए पांच स्थावरनां पांच दंगक, तथा बेंडिय, तेंडिय अने चोरिंडिय ए त्रण विकलेंडियनां त्रण दंगक, एवं जेगणीश थयां अने वीशमुं तिर्यंच पंचेंडि-बतुं, एकवीशमुं मनुष्यनुं, बावीशमुं व्यंतरिक देवोनुं, त्रेवीशमुं ज्योतिषी देवोनुं श्रने चोवीशमुं वैमानिक देवोनुं, एवं चोवीश दंनक जाणवां ॥

१९ सत्तरमे बोले ऋष्णलेत्र्या, नीललेत्र्या, कापो-तलेत्र्या, तेजोखेत्र्या, पद्मलेत्र्या श्वने द्युक्वलेत्र्या, ए ढ लेत्र्या जाणवी ॥

१० छढारमे बोले मिथ्यादृष्टि, सममिथ्या एटले मिश्रदृष्टि छने सम्यक्त्वदृष्टि, ए त्रण दृष्टि जाणवी॥ १९ र्जगणीशमे बोले छार्त्तध्यान, रौडध्यान, धर्म-

ध्यान छने शुक्लध्यान, ए चार ध्यान जाएवां ॥

१० वीशमें बोखे धर्मास्तिकायादि ठ डव्य ठे, तेने त्रीश बोखे डेलखीए, ते कहे ठे. तिहां प्रथम धर्मास्ति-काय डव्य, ते डव्य थकी एक डव्य, देत्र थकी चौद राजलोक प्रमाण, काल थकी आदि छंत रहित, जाव थकी छरूपी,गुण थकी जीव पुजलने चालवानी सहाय छापनार, ए पांच बोखे धर्मास्तिकायने डेलखीए ॥

॥ अधर्मास्तिकाय पण डव्य यकी एक डव्य, केत्र थकी चौद राजलोक प्रमाण, काल थकी अनादि अनंत, जाव थकी अरूपी अने गुण थकी स्थिर रहे-नारने सहाय आपनार, ए पांच बोखे ठलखीए ॥ ॥ आकाशास्तिकाय डव्य थकी एक डव्य, केत्र

श्वजीवराशि, ए बे राशि जाणवा ॥ १श्वावीशमे वोखे श्रावकनां बार व्रत कहे ढे. तिहां पहेखे व्रते त्रस जीवने हणे नहीं त्यने स्थावर जीवनी मर्यादा करे, बीजे व्रते पांच मोटकां जूठ बोखे नहीं, त्रीजे व्रते मोटकी चोरी करे नहीं, चोथे व्रते परस्ती-

॥ जीवास्तिकाय डव्य डव्य थकी छनंतां डव्य, केत्र थकी चौद राजलोक प्रमाण, काल थकी छनादि छनं-त, जाव थकी छरूपी छने गुए थकी चेतनगुएल कए, ए पांच बोखे जेलखीए.एवं सर्व मली त्रीश बोल थया. ११ एकवीशमे बोखे एक जीवराशि छने बीजो

शपुजलास्तिकाय डव्य डव्य यकी अनंतां डव्य, देत्र थकी चौद राजलोक प्रमाण,काल थकी अनादि अनं-त, जाव थकी रूपी अने गुण थकी पूरण गलन, समण, पमण, विध्वंसन लक्तण, ए पांच वोखे उंललीए ॥

॥काल डव्य डव्य यकी एक डव्य, देत्र यकी छढी-द्वीप प्रमाण,काल यकी छनादि छनंत, जाव यकी छ-रूपी, गुण यकी वर्त्तनालकण, ए पांच बोसे उंलखीए.

थकी लोकालोक प्रमाण, काल थकी अनादि अनंत, जाव थकी अरूपी अने गुण थकी अवकाश आपना-र, ए पांच बोसे जेलखीए ॥ नो त्याग करे छने पोतानी स्त्रीनी मर्यादा करे, पांचमें व्रते परिग्रहनी मर्यादा करे, ठठे व्रते दिशानी मर्यादा करे,सातमे व्रते पन्नर कर्म्मादाननी मर्यादा करे, आठ-मे व्रते छनर्थ दंगनी मर्यादा करे,नवमे व्रते सामायिक करे,दशमे व्रते देशावकाशिक करे,छगीयारमे व्रते पो-सह जपवास करे, बारमे व्रते साधु मुनिराजने स्जतां शुद्ध आहार पाणी आपे, एवं बार व्रत जाणवां ॥

१३ त्रेवीशमे बोखे साधुनां पांच महावत कहे ठे. साधुजी मने,वचने,कायाए करी कोइ जीवने सर्व प्र-कारे पोते हणे नहीं, हणावे नहीं व्यने हणताने रुडुं जाणे नहीं,ते प्रथम प्राणातिपातविरमणवत जाणवुं. ॥ साधु महाराज मने,वचने,कायाए करी सर्व प्रकारे पोते जूतुं बोखे नहीं, बीजाने जूतुं बोखावे नहीं श्वने जूतुं बोखताने रुठुं जाणे नहीं, ते बीजुं मृषावादविरमणवत जाणवुं ॥

॥ साधुजी मने, वचने, कायाए करी सर्व प्रकारे पोते चोरी करे नहीं, बीजा पासे करावे नहीं अने करत प्रत्ये अनुमोदे नहीं, ते त्रीजुं अदत्तादानवि-रमणवत जाणवुं ॥ ॥ साधुजी मने, वचने, कायाए करी सर्व प्रकारे मैथुन पोते करे नहीं, बीजा पासे करावे नहीं अने करताने रुडुं जाएे नहीं, ते चोथुं ब्रह्मचर्यव्रत ॥

॥ साधुजी मने, वचने, कायाए करी सर्वथा पोते परिग्रह राखे नहीं, बीजाने रखावे नहीं अने राखता-ने रुडुं जाणे नहीं, तेपांचमुं परिग्रह विरमणव्रत ॥

॥ इवे ए पांच महाव्रतना जांगा कहे हे ॥

॥ पद्देला प्राणातिपातविरमणवतना जांगा

एक्याशी थाय, ते कडे ठे॥

ए पृथ्वीकायने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हण-ताने रुडुं जाणे नहीं, तेना मन, वचन अने काया, ए त्रण योगे करी जांगा थया.

ए अपूकायने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणता-ने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन, कायाए करी. ए तेउकायने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणता-ने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए वायुकायने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणता-ने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए वनस्पतिकायने हणे नहीं, हणावे नहीं, हणता-ने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. रे के हुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए बेंडियने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए तेंडियने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए चौरिंडियने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए पंचेंडियने हणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी.

॥ बीजा मृषावादविरमणव्रतना जांगा

वत्रीश थाय ते कहे वे ॥

ए कोधना आवेशयी असस बोखे नहीं, बोलावे नहीं, बोलताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन,कायाथी. एहास्यथी जूतुं बोखे नहीं,बोलावे नहीं अने बोलता-ने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए जयथी जूतुं बोखे नहीं, बोलावे नहीं, बोलताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन, कायाए करी.

ए लोजथी जूठुं वोले नहीं, वोलावे नहीं, बोलताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन छने कायाए करी. ॥ त्रीजा छादत्तादानविरमणवतना चोपन

जांगा थाय हे, ते कहे हे ॥ ए अहप चोरी करे नहीं, करावे नहीं अने कर्ताने

रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन छने कायाए करी. ए घणी चोरी करे नहीं, करावे नहीं छने करता-ने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन छने कायाए करी. ए नानी चोरी करे नहीं, करावे नहीं छने करताने

रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन छने कायाए करी. ए मोटी चोरी करे नहीं, करावे नहीं छने करताने

रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन अने कायाए करी. ए सचित्त वस्तुनी चोरी करे नहीं, करावे नहीं, कर-ताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन, कायाए करी. ए छचित्त वस्तुनी चोरी करे नहीं, करावे नहीं, कर-ताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन, कायाए करी.

॥ चोथा मैथुनविरमण्वतना जांगा सत्तावीश थाय, ते कहे हे ॥

ए देवतानी स्त्रीने जोगवे नहीं, जोगवावे नहीं, जोग-वताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन, कायाए करी. एमनुष्यनी स्त्रीने जोगवे नहीं,जोगवावे नहीं अने जो-गवताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन अने कायाथी.

ए छ।चत्त वस्तुना परिग्रह राख नहा, रखाव नहा छ-ने राखताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन, कायाथी. ॥ एम ए पांचे महाव्रतना मली श्पश् जांगा थया ॥ श्ठ चोवीज्ञमे बोखे व्रतना जांगा ठंगणपचास कहे ठे. तिहां प्रथम एक करण ने एक योगथी नव जांगा था-

श्वने कायाथी. ए छचित्त वस्तुनो परिप्रह राखे नहीं, रखावे नहीं छ-

ने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन छने कायाए करी. ए घणो परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं छने राखता-ने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन छने कायाए करी. ए नानो परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं छने राख-ताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन छने कायाथी. ए मोटो परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं छने राख-ताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन छने कायाथी. ए सचित्त वस्तुनो परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं छने राखताने रुडुं जाएे नहीं, मन, वचन

थाय, ते कहे वे ॥

ए श्रह्पपरिग्रह राखेनहीं, रखावे नहीं अने राखता-

ए तिर्यंचनी स्त्रीने जोगवे नहीं, जोगवावे नहीं अने जोगवताने रुडुं जाणे नहीं, मन, वचन, कायाथी. ॥ पांचमा परिग्रहविरमणव्रतना चोपन जांगा

(38)

(२५)

य, ते कहे ठे. १ मने करी करुं नहीं, १ वचने करी करुं नहीं, ३ कायाए करी करुं नहीं, ४ मने करी क़रावुं नहीं, ७ वचने करी करावुं नहीं, ६ कायाए करी करा-वुं नहीं, ७ मने करी व्यनुमोर्ड नहीं, ७ वचने करी अनुमोर्ड नहीं, ए कायाए करी व्यनुमोर्ड नहीं.

॥ हवे एक करण ने बे योगथी नव जांगा याय, ते कहे ठे. १ मने करी वचने करी करुं नहीं, १म-ने करी कायाए करी करुं नहीं, ३ वचने करी कायाए करी करुं नहीं, ४ मने करी वचने करी करावुं नहीं, ५ मने करी कायाए करी करावुं नहीं, ६ वचने करी का-याए करी करावुं नहीं, ७ मने करी वचने करी व्यनु-मोछं नहीं, ७ मने करी कायाए करी व्यनुमोछं नहीं, ७ वचने करी कायाए करी व्यनुमोछं नहीं ॥

॥ हवे एक करण ने त्रण योगथी त्रण जांगा थाय, ते कहे हे. १ मने, वचने अने कायाए करी करुं नहीं, १ मने, वचने अने कायाए करी करावुं नहीं, ३ मने, वचने अने कायाए करी अनुमोर्ड नहीं ॥

॥ हवे बे करण अने एक योगयी नव जांगा थाय, ते कहे ठे. १ मने करी करुं नहीं, करावुं नहीं, १ वचने करी करुं नहीं, करावुं नहीं, ३ कायाए करी करुं नहीं, करावुं नहीं,8मने करी करुं नहीं, अनुमोड़ नहीं, ८ वचने करी करुं नहीं, अनुमोड़ नहीं,६ कायाए करी करुं नहीं, अनुमोड़ नहीं, 9 मने करी करावुं नहीं, अ-नुमोड़ नहीं, 0 वचने करी करावुं नहीं, अनुमोड़ं न-हीं, ए कायाए करी करावुं नहीं, अनुमोड़ं नहीं ॥

॥हवे बे करण श्चने बे योगथी नव जांगा थाय,ते क-दे हे. १ करुं नहीं, करावुं नहीं,मने करी, वचने करी. १ करुं नहीं, करावुं नहीं, मने करी, कायाए करी. ३ करुं नहीं, करावुं नहीं, वचने करी, कायाए करी. ४ करुं नहीं, छनुमोडुं नहीं, मने करी, वचने करी. **८ करुं नहीं, छनुमोर्डु नहीं,मने करी, कायाए करी**. ६ करुं नहीं, छनुमोंडु नहीं, वचने करी,कायाए करी. **७ करावुं नहीं, छनुमोंडु नहीं, मने करी, वचने** करी. σ करावुं नहीं, श्वनुमोंड नहीं,मने करी,कायाए करी. एकरावुं नहीं,श्वनुमोडुं नहीं,वचने करी,कायाए करी. ॥ हवे बे करण छने त्रण योगथी त्रण जांगा थाय, ते कहे हे. १ करुं नहीं, करावुं नहीं, मने करी, वचने करी, कायाए करी. १ करुं नहीं, अनुमोड़ं नहीं, मने करी, वचने करी, कायाए करी. ३ करावुं नहीं, अनु-मोडुं नहीं, मने करी, वचने करी, कायाएं करी ॥

॥ हवे त्रण करण अने एक योगथी त्रण जांगा थाय, ते कहे ठे. १ करुं नहीं, करावुं नहीं, अनुमोछं नहीं, मने करी. १ करुं नहीं, करावुं नहीं, अनुमोछं नहीं, वचने करी. ३ करुं नहीं, करावुं नहीं, अनुमोछं नहीं, कायाए करी ॥

॥ हवे त्रण करण अने वे योगथी त्रण जांगा थाय, ते कहे हे. १ करुं नहीं, करावुं नहीं, अनुमोछं नहीं, मने करी, वचने करी. १ करुं नहीं, करावुं नहीं, छनुमोडुं नहीं, मने करी, कायाए करी. ३ करुं नहीं, करांचुं नहीं, छेनुमोडुं नहीं, वचने करी, कायाए करी॥ ॥ हवे त्रण करण अने त्रण योगश्री एक जांगो थाय, ते कहे हे. १ मने करी, वचने करी, कायाए करी करुं नहीं, करावुं नहीं अने अनुमोर्छ नहीं ॥ ॥ सरवासे एक करण ने एक योगश्री नव,एक कर-ष ने बे योगश्री नव,एक करण ने त्रण योगश्री त्रण,त-था वे करण ने एक योगथी नव, वे करण ने वे योगथी नव, बे करण ने त्रण योगथी त्रण तथा त्रण करण ने एक योगथी त्रण, त्रण करण ने वे योगथी त्रण अने त्रण करण ने त्रण योगथी एक, एवं ४ए जांगा थया ॥

श्य पचीशमे बोले पांच चारित्रनां नाम कहे हे.

१ सामायिक चारित्र, बीजुं ठेदोपस्थापनीय चारित्र, त्रीजुं परिहारविशुद्धि चारित्र, चोथुं सूझ्मसंपराय चारित्र श्रने पांचमुं यथाख्यात चारित्र. एवं पांच ॥

१६ ठवीशमे बोखे नैगमनय, संग्रहनय,व्यवहार-नय, रुजुसूत्रनय, शब्दनय, समजिरूढनय अने ए-वंजूतनय, ए सात नय जाणवा ॥

१९ सत्तावीशमे बोखे नामनिक्तेप, स्थापनानि-क्तेप, डव्यनिक्तेप अने जावनिक्तेप, ए चार निक्तेपा जाणवा ॥

१७ अठावीशमे बोले उपशमसमकित, क्तयोपस-मसमकित,क्वायिकसमकित, साखादनसमकित अने वेदकसमकित, ए पांच समकित जाणवां ॥

१ए उंगणत्रीशमे बोखे श्टंगाररस, वीररस, करू-णारस, हास्यरस, रौद्धरस, जयानकरस, श्वद्धतरस, बिजत्सरस अने शांतरस, ए नव रस जाणवा ॥ ३० त्रीशमे बोखे १ वमनी पींपु, १ पींपलनी पींपु, ३ उंबरनां फल, ४ पिंपरीनी पींपु, १ कठुबरनां फल, ६ मधु, ९ माखण, ० मांस, ए मदिरा, १० हिम, ११ विष ते अफीण, सोमल प्रमुख, ११ करहा ते रो-यमा, १३ सर्व जातनी काची माटी, १४ रात्रिजोजन, २५ बहुबीजानुं फल, १६ अनंतकाय कंदमूल फल, १७ वोषानुं अथाणुं, १० काचां गोरसमां करेलां क्यां, १७ वेगण रींगणां, १० जेनुं नाम न जाणतां होइए एवां अजाएयां फल फूल, ११ तुरुफल ते चणीयां बोर तथा कुंअली वस्तु, अत्यंत काचां फल, तथा पी-लूमां, पीचू प्रमुख, ११ चलित रस ते सडेलुं अन्नादि-क, जेनो काल पूरो थयाथी स्वाद वदल्यो होय, रस चलित थइ गयो होय ते, ए बावीश अजदय वर्जवा योग्य ठे. तेनां ते नाम जाणवां ॥

३१ एकत्रीशमे बोखे एक डव्यानुयोग, बीजो ग-एितानुयोग, त्रीजो चरएकरएानुयोग श्वने चोथो धर्मकथानुयोग, ए चार श्वनुयोग जाएवा ॥ ३१ बत्रीशमे बोखे एक देवतत्त्व, बीजुं गुरुतत्त्व श्वने त्रीजुं धर्मतत्त्व, ए त्रए तत्त्व जाएवां ॥

३३ तेत्री शमे बोसे काल, स्वजाव, नियत, पूर्वकृत कर्म अने पुरुषकार ते ज्यम,ए पांच समवाय जाएवा ३४ चोत्रीशमे बोसे एक क्रियावादीना एकसो एंशी जेद,बीजा अक्रियावादीना चोराशी जेद,त्रीजा बिनयवादीना बत्रीश जेद अने चोथा अज्ञानवादी-ना सडसठ जेद, ए रीते चार प्रकारना पाखंमीर्ड हे. तेना सर्व मली त्रणसें ने त्रेसठ जेद श्रीसूयगमांग सूत्रथी जाणवा ॥

३५ पांत्रीशमे बोखे श्रावकना एकवीश गुए कही देखाडे हे. १ कुड मतिवालो न होय, पण गंजीर होय, १ पंचेंडिय स्पष्ट होय, रूपवंत होय, एटलां झं-गोपांग संपूर्ण होय, ३ सौम्य प्रकृतिवाली होय,स्व-जावे अपापकर्मी होय, ४ सर्वदा सदाचारी होय माटे सर्वे लोकने वह्वज होय, प्रशंसा करवा योग्य होय, थ संक्षिष्ट परिणामश्री रहित होय, कूर चित्तवालो न होय, ६ इह लोक परलोकना अपायषी एटले कष्ट-थी बीतो रहे, तथा अपयशथी बीतो रहे, 9 श्वराठ होय, परने ठगे नहीं, ए दाक्तिएयवालो होय, परनी प्रार्थना जंग करे नहीं, एस्वकुलादिकनी ल-जावालो होय, अकार्य वर्जेक होय, १० दयावंत होय, ११ सौम्य दृष्टिवालो होय,११ गुणी जीवोनो प-इतपाती होय, १३ जली धर्मकथानो उपदेश करनार होय, १४ सुझीलादि एवा अनुकूल परिवार युक्त होय, १५ जॅमा विचारवालो दीईदर्शी होय, १६ प-क्तपातरहितपणे गुण दोष विशेषनो जाण होय, १९ बुद्ध पुरुषों जे परिणत मतिवाला, तेने सेवनारो, तेना

॥ श्रय शिखामणना ४७१ बोल - 11 १ कोइ पण ग्रुज कार्य करतां विलंब न करवो. श्व मतलब विना लवारो न करवो. ३ ज्ञानी थइने गर्व करवो नहीं. ४ बनतां सुधी क्तमा श्रवझ्य धारण करवी. **५ घरनं ग्रह्य कोइने क**ढेवं नहीं. ६ स्त्री तथा पुत्रनी कुवात कोइने कहेवी नहीं. ७ मित्रथी कांइ पण अंतर राखवो नहीं. ए क्रमित्रनो विश्वास न करवो. ए प्रेम राखनारी स्त्रीनो पण विश्वास न करवो **४० को**इ पण कार्य करवुं ते विचारीने करवुं. ११ मात, पिता, गुरु तथा मोटा पुरुषनोविनय करवो. ११ स्त्रीने गुह्यनी वात कहेवी नहीं

श्चनुयायीपणे चालनारो होय, १० गुणाधिक पुरुषनो विनय करनारो होय, १७ कस्वा गुणनो जाण होय, १० निर्लोंजी थको पोतानी मेखे परोपकार करे, ११ ल-ब्धलक्त ते धर्मानुष्ठान व्यवहारनो लक्त जेने प्राप्त थयो होय, ए एकवीश गुण जेमां होय, ते प्राणीध-र्मरूप रत्न पामवानी योग्यतावंत कहेवाय. ए एकवीश गुण श्रावकना जाणवा ॥ इति पांत्रीश बोल समाप्त ॥

(22)

१९ ग्रहण करेखी प्रतिज्ञानो जंग करवो नहीं. १० अन्यायसी डव्य उपार्जन करवुं नहीं. **१**ए ज्ञरीरतुं बल विचार्या विना युद्ध करवुं नहीं. **१० डुःखना समये धैर्य तजवुं नहीं.** ११ माठा कार्यथी निवर्त्तवं. ११ बगलानी पेरे इंडियो गोपनी राखनी. १३ क्रुकडानी पेठे प्रजाते सहुष्यी वहेखुं उठवुं. १४ छंगथी प्रमाद इूर करवो. श्य निद्धा चेततां करवी. श्६चिंतवेख़ं कार्य पार पाड्या विना कोइने कहेवुं नहीं. १९सासरें चतुराइ धारण करवी छने मूर्खाइं तजवी. १० ग्रण लेवामां प्रयत्न करवो. **श्ए नीच नर**श्री पण जत्तम विद्या क्षेवी. ३० सरखा साथे प्रीति करवी. ३१ क्वेज्ञने स्थानके मौनपणुं धारण करवुं. ३१ मोटा साथे वेर करवुं नहीं.

१४ विद्या जणवामां संतोष न करवो.

रथ दान देतां श्वकलावं नहीं.

१६ तपस्या करवामां पाढुं हठवुं नहीं.

१३ पेट जरायाथी जोजननो संतोष करवो.

४१ मूर्ख, कायर, श्वजिमानी, अन्यायी अने छुष्ट एटखाने खामी करवा नहीं.
४१ मूर्खने हितोपदेश देवो नहीं.
४३ परस्त्रीने सर्वदा वर्जवी.
४४ इंडियो सर्वथा वश राखवी.
४५ मूर्ख मित्र करवो नहीं.
४६ खोज्ञीने डव्यथी वश करवो.
४७ उती शक्तिए परनी आशा जंग करवी नहीं.
४७ ग्रुण विना मात्र आनंबरथी रीऊवुं नहीं.

३० नीचथी विवाद करवो नहीं. ३ए जे थकी जीवने जोखम थाय ते धन पण वर्जवुं. ४० इान्चनी जपर पण निर्देय थवुं नहीं.

अभा उत्तक इटआप पंग अपायवा महा. ३६ घी, तेल, दहीं,ङूध प्रमुख जघामां मूकवां नहीं. ३९ वैद्य, व्यग्निहोत्री, राजा, नदी, व्यापारी वा-णीयो ए पांच ज्यां न होय, त्यां वसवुं नहीं.

३४ क्वेशस्थानके उर्छ रहेवुं नहीं. ३५ छन्नि, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी छने शा-स्त्रनां पुस्तक एटलांने पग लगामवो नहीं.

३३ खेवडदेवममां, जोजनमां, विद्या जणवामां, व्यापारमां श्वने वैद्य श्वागल लाज करवी नहीं. **८**९ लेखण, पुस्तक छने स्त्री, ए त्रण कोइने ञ्चापवां नहीं. **८**० आवक जोइनेे खरच करवो. थए हरएक विद्या मुखपाठे राखवी. ६० खामी प्रसन्न थये गर्वित यवुं नहीं. ६१ करियाणुं जोया वगर हाथो मेलववो नहीं. ६१ शस्त्र बांधनार तथा बाह्यण प्रमुखने धीरवुं नहीं ६३ नट,वटलेल,वेच्या,जुगारीने जधारे आपतुं नहीं. ६४ग्रप्तधन देवुं तो हुइा। यारी श्रीपक्को बंदोबस्त करवो. ६५ वे चार साह्ती राख्या विना धन आपवुं नहीं. ६६ जधार लावेलुं धन मुदत पहेलांज आपवुं

५६ वचननुं दारिद्य राखवुंज नहीं.

छने पोतानी माता, ए पांचे माता जाणवी. **८५ कार्य तथा सत्कार विना को**इने घेर जवुं नहीं.

u३ पोताना व्यवग्रुण शोधी काढवा. **ua राजानी स्त्री, ग्रुरुनी स्त्री, मित्रनी स्त्री, सा**स

८१ प्राणांते पण सत्य बोलवुं वर्जवुं नहीं.

५१ पाणी गतीने तथा जोइने पीवुं.

धए राजा रीजे तोपण विश्वास करवो नहीं। य० एक छाद्तर शिखवनारने पण गुरु करी मानवो.

(২১)

(१५)

६९ घरमां पैसा ठतां देवुं करवुं नहीं. ६० देवुं होय तो ते आपवाना जयममां रहेवुं. ६ए प्रीतिवंत साथे प्रायः खेवमदेवम करवी नहीं. 9० चोरेली वस्तु जो मफत मले तोपण लेवी नहीं. ७१ छुराचारीने जागीदार करवो नहीं. ७१ लांघण करवी नहीं. 9३ खात्रीदारने किलीदार करवो. 98 छाप्युं लीधुं होय ते लखवामां छालस्य न करवुं. ७५ नवा नवा ग्रमास्ता मेता करवा नहीं. ७६ ज्ञातिमां नम्रता राखवी. 99 स्त्रीने सिष्ट वचनथी बोलाववी. 90 शत्रुने पेटमां पेसी वश करवो. ९७ मित्र पासे पण साद्ती विना थापण मूकवी नहीं. **00 एकाद वे मोटानी उंलखाए अवझ्य करवी. 0**१ बनतां सुधी कोइनी साक्ती जरवी नहीं. **०२ परदेशमां केफी वस्तु सेवन करवी नहीं**। **ॻ३ उत्सव मूकी, एरु छ**ने पितानुं अपमान करी, जोजन निर्च्रंगी, रुदन सांजली, मैथुन सेवी, जलटी करी, समीप आव्रेलुं पर्व झूवगुणी, डू- धनुं जोजन करी, एटखां वानां करी श्रात्महि-तैषीए परदेश जवुं नहीं. ob जे घरमां कोइ माणस न होय ते घरमां न जुरं. **5**थ कारण विना पोताना डव्यनी आशा न करवी. **ए६ परदेशमां आमंबर धारण करवो. ए** कोइनी वात कोइने कहेवी नहीं. **00 माता पितानी आज्ञा लोपवी नहीं.** ce माता पितानी सेवा चाकरी मन राखी करवी. ए० ग्रह छने माता पिताना दररोज पग दाबवा. **एर माता पिता आगल जुनुं बोल**वुं नहीं. एश माता पिताना धर्मादिना मनोरंच पूर्ण करवा. ए३ मोटा जाइने पिता सरखो जाणवो. **७४ जाइनी छुर्द**झा छूर करवी, क्रमार्गथी निवारवो. एथ रोगमां, जुष्कालमां, रात्रुना जयमां अने राज-**द्वारमां, एट**खे स्थानके जॉइनी सहायता करवी. एद कोइ पण उत्तम कार्यमां जाइने जूलवो नहीं. एउ नाटक, कौतुक, घणा जनोमां स्त्रीने जोवा जवा देवी नहीं.

एठ स्त्री पासे सारी रीते सेवा कराववी. एए स्त्रीने रात्रे बद्दार जवा देवी नहीं.

११४ कन्यानुं डव्य खेवुं नहीं. ११५कन्यानो वर कन्याना वयश्री वधारे वयनो करवो. ११६ रोगी, वृद्ध, मूर्ख, दरिझी, वैरागी, कोधी अने नानी वयनो, एटलाने कन्या आपवी नहीं.

न ञ्चापवी.

१११ जन्ने जन्ने पाणी पीवुं नहीं. ११९ सुती वखते ठाती पर इाथ राखवो नहीं. ११३ कन्या सारा कुलमां आपवी, डुःखी कुलमां

१०० जंधुं तथा चितुं सुवुं नहीं. १०५ जमतां ठींक छावे तो तरत पाणी पोइं. ११० छन्ने उन्ने पीसाब करवो नहीं.

१०४ सगां साथे कदापि विरोध करवो नहीं. १०५ जे घरमां एकली स्त्री होय ते घरमां जवुं नहीं. १०६ धर्मना काममां सगांउने जोकवां. १०९ बगासुं खातां, वींकतां, उंडकार खातां उपने ह-सतां, एटसे ठेकाणे मुख दाववुं नहीं.

१०० स्त्री रीसाइ होय तो तरत मनावो लेवी. १०१ स्त्रीने घरना काममां डव्य आपी वर्त्ताववी. १०२ उत्सवना दिवसे सगां संबंधीने जूली जवां नहीं। १०३ दुःख पामतां एवां सगां संबंधीर्जने सहाय करो.

११९ मोटो पुरुष घेर आवे तो) जना यइ सन्मान देवुं. ११० दोस्तदारी मित्राचारी पंडितो साथे राखवी. ११ए नवां नवां शास्त्र वांचवानो छज्यास जाधु करवो. ११० कको पण मंथ जणतां अधूरो मूकवो नहीं. १११ पोताना मुखर्थी पोतानी प्रशांसाँ करवी नहीं. १११ ढता पराक्रमे निरुचमी चत्रुं नहीं. ११३ कपटीना आंग्वरनो विश्वास न करवो. १९४ गइ वस्तुनो शोक न करवो. ११५ शत्र होय तेना पण मरणसमये साशाने जवुं. ११६ शूरवीर थइने निर्वलने छुःख देवुं नहीं. ११९ अति कष्टे पण आत्मघात करवो नहीं. १९० हास्य करवा कोइनुं मर्म प्रकाशवुं नहीं ११ए हास्य करतां कोइ उपर कोध करवो नहीं. ^{१३०} वे ज**ण विचार करता होय लां ज**वुं नहीं. १३१ पंच नाकारो करे ते काम करवुं नहीं. ^{१३९} माठुं काम करी हर्ष पामवो नहीं. १३३ तपस्या करी इतमा धारण करवी. १३४ जणेलुं शास्त्र नित्य प्रत्ये संजारतां रहेवुं. १३५ पुरुषे रात्रिए दर्पेण जोवुं नहीं. १३६शयन,मैथुन,निझा,आहार,ए संध्यासमये वर्जवां. १३९ रोटलो आपनो पण र्रंटलो आपनो नहीं. १३० सर्वनी साथे र्रलखाण पिठाण राखवी.

१३७ जोजन कस्वाने एक प्रहर पूर्ण न थयो होय एटलामां फरी जोजन करवुं नहीं, तेमज जो

जन कस्या पठी बे प्रहर थाय के फरी जमी खेवुं; परंतु बे प्रहरथी उपरांत जूख्या रहेवुं नहीं.

१४० स्त्रीनां वखाण तेना मरण पत्नी करवां. १४१ राजा,देव छने गुरुनी पासे खाली हाथे जवुं नहीं १४१ निर्लज स्त्री साथे हास्य न करवुं. १४३ ग्रुज कार्यमां काखविलंब न करवो. १४४ तमकेची आवी तरत पाणी पीवुं नहीं. १४५ अर्द्ध रात्रे जच खरे गुह्यनी वातों कहेंवी नहीं. १४६ जोजननी वच्चे अने छंतमां जल पीवुं. १४९ श्वजीर्ष थाय तो एक वे टंक जोजन वर्जवुं. १४७ इर्षेना समयमां शोकनी वात त्यजवी. १४७ कोइ कोधना श्रावेशथी निष्ठुर वचन त्रापणने छावी कहे तोपण न्यायमार्ग मूकवो नहीं-१५० माता, पिता, गुरु, शेठ, खामी अने राजा, एटलाना अवग्रुण बोलवा नहीं.

१५१ मूर्ख, छुष्ट, अनाचारी, मलिन, धर्मनी निंदा करनारो, कुशीसीर्ड, खोजी अने चोर, एट-लानो संग क्यारे पण करवो नहीं. १५२ छजाएया माएसनी कीर्त्ति करवी नहीं. १५३ छजाखा माणसने पोताना घरमां राखवुं नहीं. १५४ श्रजाप्या कुल साथे सगाइ करवी नहीं. १५५ छजाखा माएसने चाकर राखवो नहीं. १८६ पोताची मोटा माणस उपर कोप न करवो. १५९ मोटा माणस साथे क्वेश करवो नहीं. १५० गुणवानू माणस साथे वाद न करवो. १५ए दारिद्य आव्ये आगली कमाइनी इन्ना राखे ते मूर्ख. १६० पोताना गुणनां वखाण करे ते मूर्ख. १६१ माथे देवुं करीने धर्म करे ते मूर्ख. १६१ जधारे धन आपीने मागे नहीं ते मूर्ख. १६३ खजन साथे विरोध करे छने पारका लोक साथे प्रीति करे ते मूर्ख जाणवो.

राज आति कर ते मूख जाखवा. १६४ न्यायमार्गे धन उपार्जन करवुं. १६५ देशविरुद्ध कार्य न करवुं. १६६ राजाना वेरीनी संगति न करवी.

- २७१ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तो वाचा श्ववस्य पालवी. २७१ धर्मशास्त्रना जाण पासे बेसवुं.
- ३७० विश्वासघात करवो नहीं. ३७० सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तोपण पोतानी
- एटखाने कोपाववा नहीं. **१**९ए नीचनी सेवा छाचरवी नहीं.
- १९५ चोरीनी वस्तु खेवी नहीं. १९६ सारी नरसी वस्तु जेखी करी वेचवी नहीं. १९९ छापदानुं वर्जन करवा राजानो छाश्रय खेवो. १९० तपस्तीने, कविने, वैद्यने, मर्मना जाणने, रसोइ करनारने, मंत्रवादीने छने पोताना पूजनीयने,

खीने उद्यम मूकी आपनो नहीं.

- ९७९ खाटा खुख खुखुपा पहार १९१ देव गुरुने विषे जक्ति राखवी. १९३ दीन श्वने व्यतिथिनी बनती सेवा करवी. १९४ जे जाग्यमां इशे ते मलशे एवो जरोसो रा-
- १७१ खोटा लेख खखवा नहीं।
- १६ए पोतानो धर्म मूकवो नहीं. १९० पोताना आश्रये रह्यो होय तेनुं हित करवुं,
- १६० जला पामोशीनी पासे रहेवुं.
- (३१) १६७ घषा माणसो साथे विरोध न करवो.

(३१)

१०३ कोइनी निंदा करवी नहीं. १०४ मार्गे चालतां तंबोल न खावां. १०५ व्याखी सोपारी दांते करी जांगवी नहीं. १०६ पोते वात कही पोतेज हसे, जेम तेम बोखे, इह जोन प्रकोग निर्मालय करे म पर्कनां जिस ने

लोक परलोक विरुद्ध काम करे, ए मूर्खनां चिह्न ढे. १०७ उपडवना स्थानके रहेवुं नहीं. १०० ञ्रावक जोइने खरच करवो. १०ए डव्यानुसारे वस्त्रादिक पहेरवां. १ए० लोक निंदा करे ते काम करवुं नहीं. १ए१ खोटां तोलां, खोटां मापां राखवां नहीं. १ए१ घरेणां राख्या विनाव्याजे नाणुं ञ्यापवुं नहीं.



Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnayasagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231, Mandvi, Sackgalli, Bombay.

Jain Educationa International

मुक्त थवाना दृष्टांतरूप तथा सामान्य प्रकारे उत्पति-क्यादि चुऊि प्रमुखनुं रूप दर्शावनारो ग्रंथ. ०-४-० परदेशी राजानो रास-परजवादिक नहीं मान-नारा नास्तिक जनोने पीयूष सम उपदेशरूप तथा देवडव्यना उपजोगथी थती हानि तथा वृद्दोथी थतां शुजागुज फल तथा जिद्दानुं खावाथी थता छवगुणो विषेनां दृष्टांतो. ०-४-०

शत्रुंजय तीर्थमाला, रास, उद्धारादिकनो संग्रह प्रंथ-न्ध्रा पुस्तक समस्त जैनी जाइउने कार्तिक तथा चैत्री पूर्णिमादिक दिवसोमां तथा श्री शत्रुंजय यात्रा जती वखत अवद्य पासे राखवा योग्य तथा शत्रुंजयना पटमंडप आगल वांचवा माटे ठे. ०-५-० रत्नच्छक व्यवहारीआनो रास-संसारसमुद्धषी

हारश्वे राजा अग सारामसा राखागा सस-सल वचन माहात्म्यरूप. ०-५-० मंगलकलश कुमारनो रास-पुएयफल माहात्म्यरूप ए विवेकी पुरुषनुं चरित्र. ०-५-०

रात इतावाल एक माट राज्यक महामत्राका कथा हे. ०-५-० हरिश्चंड राजा छने तारामती राणीनो रास-सत्य

अजयकुमारनो रास--बुद्धिके गुणोकी चमत्कारी रीते कृतीवाखे एक मोटे राज्यके महामंत्रीकी

जत्तमचरित्र कुमारनो रास-वस्त्रदान फल माहा-ोन रम्यरूप महा प्रतापी पुरुषनुं ढालबंध चरित्र.०-४-० रोठ कयवन्ना शाहनो रास-सौजाग्यवृद्धि.०-४+० रात्रिजोजन परिहारक रास-रात्रिजोजनना पष्टि हारथी उत्पन्न थयेला गुज फलने दर्शावनारे तथा सुदृष्टी जनोने रात्रिजोजन निषेध निमिसे दृष्टांतरूप ज्ञान आपनारो ग्रंथ. 📀 0-3-0 , धर्मबुद्धि मंत्री तथा पापबुद्धि राजानो रास-धर्मेची चतां गुज फलो तचा पापची चतां छनिष्ट फलोनुं विवेचन करनारो तथा धर्ममां प्रवृति अने पापमां निद्दत्ति करावनारो यंथ तथा सज्जनना दोहा वगेरे. 0-3-0

व्यापारी रास तथा उपदेश रास-आ ग्रंथ व्या-पार करवा नीकलेला जीवरूप होठी आना रूपथी चोराशी लाख योनिरूप बंदरो बदलवा वगेरे विषयथी वैराग्यदर्शक पदवाक्यना प्रबंधमय तथा उपदेशमय वाक्यथी जरपुर अंतःकरणने असर करे तेवो रसाल शिक्तारूप ठे. ०-१-०